

यह एक महत्वपूर्ण पत्र है।
पढ़ने के बाद अपने मित्रों
को भी दें

गुस्सा खतरनाक है
वाणी अक्षमता.....

आयुर्वेद के मौलिक.....
Heart Disease

नियमों की आड़ में
अध्यापकों की

Diabetic Nephropathy
T. Arjuna Bark

हृदय का बढ़ना
सीसा—विषाक्तता

गुस्सा खतरनाक है

गुस्से का विवेक अंत, और अनर्थ की शुरुआत है। प्रख्यात दर्शनशास्त्री सोना का कहना है कि क्रोध मनुष्य को मदिरा की भांति विचारशून्य तथा पक्षाघात की भांति शक्तिविहिन कर देता है। क्रोध की अवस्था में मस्तिष्क का शरीर की आपातकालीन क्रियाओं पर से नियंत्रण समाप्त हो जाता है तथा मनुष्य को विवेकहीन कर गलत कार्य करने को विवश करती है।

वैसे तो ईर्ष्या, घृणा, द्वेष आदि सभी बुरे भाव मनुष्य की सेहत के लिये घातक हैं। स्वास्थ्य के नजरिये से देखा

जाये तो गुस्सा ही आदमी की सबसे बड़ा दुश्मन है। क्रोध की अवस्था में मनुष्य के भीतर एक प्रचंड वेग समाहित हो जाता है। लेकिन समय के साथ क्रोध की समाप्ति पर आदमी शराबी की भांति स्वयं को अत्यन्त कमजोर और निडाल पाता है। पाइथोगोरस का कथन सत्य ही है कि गुस्सा बेवकूफी से शुरू होकर पश्चाताप पर खत्म होता है।

बहरहाल हम गुस्से से शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर विचार करें तो सर्वप्रथम यह स्पष्ट हो जाता है कि क्रोध मूलतः एक

मानसिक रोग है जो शनैः शनैः अपने दुष्प्रभाव शरीर पर छोड़ता है। क्रोध की अवस्था में शरीर में कई प्रकार के विषों की उत्पत्ति हो जाती है, जो शरीर के आंतरिक अंगों को घातक नुकसान पहुंचाते हैं। वैज्ञानिकों पर द्वारा इस सम्बन्ध में चूहे पर प्रयोग कर पाया कि बाईस मिनट बाद चूहा मनुष्य को काटने दौड़ा, पैतालीसवें मिनट में उसने खुद को काटना शुरू कर दिया और अंततः एक घंटे में उसने सिर पटक कर अपनी जान दे दी। इन प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि क्रोध के कारण शेष पृष्ठ— 2 पर

Heart Disease

Cardiovascular diseases represent the major cause of mortality in dialysis and transplant patients. Oxidized LDL (ox-LDL) plays a major role in the development and progression of atherosclerotic lesions. It has been suggested that high-density lipoprotein has the capacity to reduce the oxidative modifications of LDL due to the presence of enzyme Paraoxonase (PON1). Serum Paraoxonase 1 (PON1) is an esterase (aryldialkylphosphates, EC 3.1.8.1) synthesized and secreted by the liver associated with a specific

HDL particle also containing clusterin and apolipoprotein (apo) A1 that hydrolyzes organophosphate compounds, aryl esters, oxidized phospholipids and lipid peroxides (1,2). The enzyme is found to protect both HDL and low-density lipoproteins (LDL) against peroxidation, which suggests a possible involvement of PON1 in the antiatherogenic properties of HDL.

Low serum PON1 activity is associated with several risk factors for coronary heart diseases, including diabetes, hypercholesterolemia and smoking. **Nidhi Pandey**

Diabetic Nephropathy

Diabetes mellitus is a global problem with approximately 150 million diabetic patients. This chronic condition poses a five times greater risk for development of nephropathy and has become the leading cause of end stage disease ERSD. Almost one third of the diabetic patients develop diabetic nephropathy in their lifetime.

Diabetic nephropathy is defined as persistent albuminuria detected by various dipsticks (Albustix positive or clinical albuminuria) and more commonly represented by urinary albumin excretion more than 300mg/24h. This diabetic nephropathy is almost irreversible.

शेष पेज—2 पर

वाणी अक्षमता : रहस्योद्घाटन

वाणी अक्षमता : आज ज्यादातर लोग डिस्लेक्सिया नामक बीमारी के बारे में नहीं जानते हैं। डिस्लेक्सिया शब्द का उद्भव दो ग्रीक शब्दों “डिस” और “लोकिसिस” नामक शब्दों से हुआ है जिसका संयुक्त अर्थ पाचन की जटिलता होता है। डिस्लेक्सिया भी यही है। यह एक ऐसा रोग है जिसमें जीवन

के प्रारम्भिक काल में व्यक्ति के पढ़ने की क्षमता का निष्पादन उसके बुद्धिमत्ता के समस्याओं के अतिरिक्त व्यक्ति को भाषिक कुशलता में भी कुछ कमियाँ होती हैं।

इस प्रकार, डिस्लेक्सिया एक अधिनाम — अक्षमता है। इसमें निम्नलिखित सामान्य लक्षण देखे जा सकते हैं:

1. व्यक्ति की बुद्धि का स्तर औसत या औसत से ऊपर होता है।
2. सूचनाओं के संवहन, मुख्यतः छपे हुए शब्दों के अर्थ समझने में कठिनाई होती है।
3. स्मृति की योजनाबद्धता का अभाव।
4. हसी के पात्र बन जाने की शेष पेज—3 पर

T. Arjuna Bark

Bark extract of T. arjuna possesses potent antidiabetic activity. The use of Terminalia arjuna bark in the management of hypercholesterol-

aemia has been widely reported. The pharmacological studies have shown antiviral anti-mutagenic antiplague form-

शेष पेज—2 पर

आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्त

आयुर्वेद के कुछ मौलिक सिद्धान्त इस पर हैं कि दर्शन की भाँति निरर्थक दिखाई पड़ने वाला कोई सिद्धान्त यहाँ नहीं है। सत्व रज तम: आयुर्वेद में दोष त्रय (वात, पित्त, कफ) प्रसिद्ध है। इन दोषों के कारण शरीर को दोष, धातु और मलपुंज कहते हैं।

दोष धातु मल मूलमूत्र शरीरम् ये हमारे शरीर में रहते हैं। ये पदार्थ क्षोभ प्राप्त करते हुए रस आदि धातुओं में विकार या दोष उत्पन्न करते हैं। ये सम अवस्था में रहते हुए शरीर का धारण और पोषण करते हैं। विषम होकर यही मृत्यु का कारण बनते हैं। लोग इस शरीर का पांच

तत्वों का बतलाते हैं। वायु, अग्नि, जल से क्रमशः वात पित्त कफ बनते हैं। शेष दो आकाश और पृथ्वी तत्व निष्क्रिय हैं। वायु में आकाश और कफ में पृथ्वी को सम्मिलित कर लिया गया है। तमाम रोगों की उत्पत्ति में ये तीन दोष ही कारण मूल हैं।

शेष पेज—3 पर

पठन—पाठन एवं शोध कार्य शांत मन एवं प्रिय वातावरण में ही सम्भव है। परन्तु यह 'शांति' एवं 'प्रिय' शब्द सापेक्ष है जो हर व्यक्ति के लिये अलग-अलग हो सकता है। यह इसी प्रकार से समझना चाहिये जैसे कि आज हर व्यक्ति के लिये एक ही रोग के निवारण हेतु अलग-अलग औषधियों का स्तेमाल। वैज्ञानिक भाषा में उसे Customized medicine कहते हैं। आयुर्वेद में तो यह शुरू से प्रयोग में है। जहाँ हर व्यक्ति के Constitution (व्यक्तित्व) को ध्यान में रखकर वैद्य दवा का निर्धारण करता है। त्रिदोष के आधार पर हर व्यक्ति की बनावट एवं सोच अलग है जो अब Gentic study से भी सिद्ध हो चुकी है। परन्तु प्रशासनिक दृष्टिकोण इसके एकदम विपरीत है। यहाँ पर 'एक निर्दोष को सजा न मिल जाय इसलिये 9 अपराधी भी छुट जाये तो फर्क नहीं' जैसे सिद्धान्त पर कार्य किया जाता है। वास्तव में एक अपराधी को सजा देने के लिये 9 निर्दोष लोगों को कष्ट देने की प्रथा को मैं Red Tapism के नाम से प्रतिपादित करता हूँ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU) में भी इसी प्रथा का बोला-बाला रहा है। हलाकि इस वर्तमान प्रशासनिक काला काफी परिवर्तन हुये है जो सराहनीय है परन्तु आज भी इस विचारधारा से पूरी मुक्ति नहीं मिल पायी है। इसका कारण यहाँ का अध्यापक ही है। इस देश में जहाँ लोकतन्त्र के नाम पर एक Ph.D. धारक एवं एक अनपढ़ गवार का बराबर मताधिकार है इसी कारण राज नेताओं का चयन भी गवार परम्परा के मतो से ही प्रभावित होता है। तथा शिक्षित वर्ग धीरे-धीरे इस प्रक्रिया में अपना अधिकार खोता जा रहा है यह जो एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रक्रिया है। इसे रोकना होगा पर कैसे? एक बड़ा प्रश्न सामने है।

BHU में भी कुछ शिक्षक ऐसे हैं जो अपनी सेवाकाल के आधार पर उच्च पदों पर आसीन हो गये हैं परन्तु उनका शैक्षणिक पक्ष बहुत ही कमजोर रहा है। ऐसे अध्यापक अपने अधीनस्त अध्यापकों को आगे बढ़ने में एक दिवार की तरह खड़े हैं जिससे नाये अध्यापकों को गलत संदेश जा रहा है। यदि इसे रोकने का उपाय न किया गया तो विश्वविद्यालय में तेजी से की जा रही नियुक्तियों से आये मेधावी अध्यापक भी गलत दिशा में चले जायेंगे जो इस महामना की संस्था के लिये अभिशाप होगा।

मेरी सोच में अध्यापक को शोध के लिये प्रेरित करना होगा। ऐसे अध्यापकों को विशेष सम्मान देना होगा, विशेष धन उपलब्ध करना होगा तथा उनकी शिकायतों पर विशेष ध्यान देना होगा। जो कुछ करने चाहते हैं परन्तु आज के विश्वविद्यालय की परम्परा उन्हें करने की इजाजत नहीं देती उन अध्यापकों को चिन्हित कर लीक से हटकर स्वायत्तता प्रदान करने की आवश्यकता है वरना वर्तमान कुठाराघात करने वाले Negative सोच के अध्यापक जो Head, Dean, एवं Director पद पर आसीन हैं इन प्रतिभाओं को नष्ट कर देगी। यही कारण है कि देश की विभिन्न केन्द्रीय योजनाओं का पैसे दक्षिण भारत की संस्थाओं को चला जा रहा है तथा U.P. की संस्थाये इस केन्द्र सरकार की योजनाओं से वंचित रह जा रही है। वैचारिक परिवर्तन की एक मुहिम चलाने की आवश्यकता है।

प्रो० यामिनी भूषण त्रिपाठी

गुस्सा खतरनाक है.....

उत्पन्न होने वाली विषाक्त शर्करा पाचन शक्ति के लिये घातक है। यह रक्त को विकृत कर शरीर में पीलापन, नसों में तनाव, कटिशूल आदि पैदा कर देती है।

चिकित्सा वैज्ञानिकों के अनुसार क्रोध करने गुस्से से शरीर को माँसपेशियाँ उत्तेजना के कारण एकदम तनाव में आ जाती हैं। माँसपेशियाँ फड़कने लगती हैं। इसी तरह चेहरे में भी खिंचाव आने लगता है, जो शरीर के अन्यान्य अंगों को भी प्रभावित करता है। मुखमंडल लाल होकर तमतमाने लगता है। शारीरिक रसायनों का अनुपात गड़बड़ा जाता है।

क्रोध की अवस्था में शारीरिक क्रिया जो सर्वाधिक प्रभावित होती है, वह श्वसन क्रिया। दरअसल क्रोध के आवेश के कारण शरीर में उर्जा का अभाव होने लगता है। इसे पूरा करने के लिये श्वसन क्रिया को अधिक तेजी से काम करना पड़ता है। जिससे फेफड़ों में इस प्रकार की श्वसन क्रिया अनावश्यक रूप से एकाएक बढ़ जाती है। इस दौरान शरीर अधिक मात्रा में आक्सीजन ग्रहण करता है जो उर्जा का मुख्य स्रोत है। यदि ऐसे समय में शरीर में उर्जा के अभाव की

पूर्ति अन्य रोगों में संभावना बढ़ जाती है। डॉ० जे० एस्टर नामक वैज्ञानिक का कथन है कि पन्द्रह मिनट क्रोध में रहने से मनुष्य के शरीर में इतनी ऊर्जा नष्ट हो जाती है जितनी कि वह आसानी से साधारण अवस्था में नौ घंटे तक कड़ी मेहनत कर सकता था। गुस्सा दिल की बीमारी के लिये भी काफी सीमा तक उत्तरदायी होता है। क्रोध की अवस्था में दिल की धड़कन सामान्य से कहीं अधिक बढ़ जाती है जिसके कारण शरीर में रक्त संचार की गति भी असामान्य रूप से तीव्र हो उठती है। हृदय, धमनियों व रक्त वाहिनियों को अधिक कार्य करना पड़ता है। ऐसी सूरत में रक्त में ऑक्सीजन का अनुपात बढ़ जाता है और अधिक ऊर्जा का निर्माण होता है। हृदय पर पड़ने वाला यह अतिरिक्त भार रक्तचाप सरीखे रोगों को उत्पन्न करता है। कभी-कभी ऐसी स्थिति में हार्ट अटैक या हार्ट फेल हो सकता है। अक्सर देखा जाता है कि क्रोधी स्वभाव के लोगों का हाज़मा ठीक नहीं होता। इसका मूल कारण यह है कि क्रियाशीलता लगभग समाप्त हो जाती है। गुस्से के अवस्था में खाया पीया भोजन नहीं पचता। इससे पेट दर्द, बदहजमी और

अन्य रोग बढ़ने लग जाते हैं। क्रोध शरीर में अनेकानेक व्याधियों व आंतरिक रोगों को तो जन्म देता ही है, साथ ही यह मनुष्य के सौन्दर्य को भी नष्ट करता है। शरीर में जहाँ-तहाँ नीली नसें उभर आती हैं, चेहरे पर असमय झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, आँखों के नीचे काले निशान पड़ जाते हैं। क्रोध के समय आँखों की दृष्टि-सीमा में फ़ैलाव आ जाता है जो नेत्र ज्योति के लिये घातक है। इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि क्रोध से बचा जाये और इयका सबसे अच्छा उपाय यही है कि क्रोध के कारणों का पता लगाकर आत्म नियंत्रण द्वारा उनके निवारण का प्रयास किया जाय। क्रोध से उत्पन्न होने की संभावना को देखते ही विषयांतर कर दीजिये। किसी अन्य कार्य में व्यस्त हो जाइये। एक गिलास ठण्डा पानी लीजिये। समय का अंतराल क्रोध पर नियंत्रण के लिये अतिआवश्यक है।

कैलाश जैन, सचिव आयुर्वेद

T. Arjuna Bark...

tion, anticancer and hypotensive properties and abnormal platelet activity diabetes in human trial.

Dr. Vachaspati Tripathi
Surya Pharmaceuticals

हृदय का बढ़ना (Cardiac Hypertrophy)

कार्डियक हाइपरट्रॉफी वह अनुकूलित अनुक्रिया है जो कि हृदय कोशिकाओं में विभिन्न प्रकार अंतः तथा वाह्य प्रेरकों द्वारा होती है। हृदय की मांसपेशियों में हाइपरट्रॉफ प्रारम्भिक अवस्था में लाभप्रद

Diabetic Nephropathy..

microalbuminuria, which is defined as elevated urinary albumin excretion below the level of clinical albuminuria undetected by Albustix (Albustix- negative albuminuria). It can only be detected by special methods such as RIA, ELISA, and immunoturbidimetry. Diabetic nephropathy at this microalbuminuric stage.

Prof. Y. B. Tripathi

है, जबकि अधिक काल तक की हाइपरट्रॉफी हृदय की पेशियों में ढीलापन, हृदयाघात तथा अन्य हृदय रोगों और मृत्यु का कारण हैं। कैल्सिन्यूरिन (Ca²⁺ कैल्मोडुलीन डिपेन्डेन्ट प्रोटीन फास्फोटेस) को बहुत ही तेजी से महत्ता दी गयी है, क्योंकि यह उत्क्रमणीय प्रोटीन फास्फोरिलेशन का कार्य करता है। कैल्सिन्यूरिन अवरोधक जैसे साइक्लोसोरिन A (CA) और टैक्रोलीमस

(FK506) उत्क्रमणीय हृदय हाइपरट्रॉफी का कार्य करते हैं।

कैल्सिन्यूरिन के द्विधातु क्रियाशील केन्द्र में Fe³⁺ की अधिकता यह दर्शाती है, कि इसमें क्रियाशील ऑक्सीजन जातिया हैं। इस तथ्य के आधार पर, हृदय हाइपरट्रॉफी को प्रति आक्सीकारकों के द्वारा सन्तुलित किया जा सकता है।

प्रो० यामिनी भूषण त्रिपाठी

सीसा-विषाक्तता

हमारे पर्यावरण में विषाक्त तथा अविषाक्त दोनों ही प्रकार के परमाणु, आवेशित कण तथा अणु पाए जाते हैं। इन विषाक्त पदार्थों का मुख्य स्रोत उद्योग है तथा इनके जैविक तंत्र में प्रवेश से जैवरसायनिक पथ

अव्यवस्थित होता है तथा कुछ परिस्थितियों में यह जीव की मृत्यु का भी कारण बनते हैं। सीसा, भूपर्पटी पर सबसे अधिक मात्रा में पाई जाने वाली विषैली धातु है जिसे प्रयोग प्रागैतिहासिक काल शोध पेज-3 पर

वाणी अक्षमता : रहस्योद्घाटन.....

वजह से व्यक्ति में चिन्ता और हीन भावना बढ़ जाती है और आत्मविश्वास में कमी आ जाती है।

लक्षण : बचपन से ही भाषा तथा वाणी में जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कारण : ज्यादातर यह अक्षमता तंत्रिका तंत्र के अन्दर वाणी के समायोजन में कमी के कारण होता है। अधिकतर व्यक्तियों में बाया गोलार्द्ध दाहिने गोलार्द्ध

की अपेक्षा आकार में बड़ा होता है। इस अक्षमता से प्रसिप्त बच्चों के टेम्परो-ऑक्सीपिटल क्षेत्रों को सक्रिय करने पर क्रियाशीलता

अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है। उपचार : इसे पूरी तरह से ठीक नहीं किया जा सकता है। परन्तु नैदानिक प्रशिक्षण द्वारा इसे नियंत्रित किया जा सकता है। बहुसंग्राहक अधिगम सबसे उपयोगी निदान है जिसके अन्तर्गत बच्चों को उनके संग्रहकों से

समन्वयन के साथ नाम, ध्वनि और अक्षरों के आकारों को सिखाया जाता है।

ऐसे रोगियों को कम्प्यूटर के प्रोग्राम जैसे 'टेक्स्ट हेल्प' से भी लाभ मिलता है। इसमें सभी भाषाओं की सुविधा होती है। जैसे ही व्यक्ति टाइप करता है उसे भाषा के रूप में अक्षर, शब्द वाक्य का प्रत्युत्तर मिलता है।

जितेन्द्र कुमार चौरसिया

आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्त.....

ऋतु भेद से इन दोषों का संचय, कोप तथा सम होना पाया जाता है। दोषों की चिकित्सा ही वस्तुतः चिकित्सा है।

द्रव्यगुण : द्रव्य का सेवन करने पर उसमें अनुभव क्रम से रस, गुण, वीर्य, विपाक, शक्ति या प्रभाव से पाँच अवस्थाएँ बनाती हैं। ये सभी गुण (रसादि) द्रव्य के आश्रित रहते हैं। द्रव्य के बिना इनकी सत्ता नहीं होती।

रस : मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय—छः हुए परन्तु आधुनिक काल में चार प्रकार के ही अधिक मान्य हैं। रस ही पचने पर विपाक कहलाता है तथा यह मधुर, अम्ल, कटु — ये तीन की अवस्था में रहता है। महाभूतों के मेल से इन रसों की उत्पत्ति मानी जाती है।

पृथ्वी + जल = मधुर

पृथ्वी + अग्नि = अम्ल

पृथ्वी + आकाश = कटु

जल और अग्नि मिल कर लवण, वायु और अग्नि मिलकर तिक्त तथा पृथ्वी और वायु मिलकर कषाय रस बनाती हैं। रस आदि

निर्देश से गुणादि का वर्णन आयुर्वेद की अपनी व्यवस्था है। द्रव्यों की परीक्षा मुख्यतः उनके रस ज्ञान से ही होती है। द्रव्यों की परीक्षा में रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव और विचित्र प्रत्ययारव—धत्व का विचार होता है। पंचमहाभूत तथा द्रव्य की शक्ति (प्रभाव) के सम्बन्ध को समझ लेना बड़ा उपादेय है। आयुर्वेद में पंच महाभूत का सिद्धान्त बड़े ही सार्थक ढंग से और जितना उपयोगी है, बतलाया गया है। किस द्रव्य में कौन महाभूत न्यूनाधिक है, इस बात का तो उल्लेख किसी आचार्य ने नहीं किया। पृथ्वी और जल तत्व भूमि का प्रधान है। इन दोनों में पृथ्वी तत्व अधिक साकार होता है। इसी कारण हम स्थूल शरीर को पार्थिव शरीर कहते हैं।

शक्ति अचिन्त्य है : द्रव्य अपने प्रभाव से पहचाना जाता है। चेतकी हरड़ के हरे वृक्ष के नीचे बैठने मात्र से शौच उतर जाता है। सहदेवी की जड़ सिर में बांधने से ज्वर हर लेती है। परन्तु प्रभाव

हमेशा एक जैसा ही नहीं होता। पारद और गन्धक दोनों उग्र वीर्य हैं परन्तु दोनों मिलकर अद्वितीय "रसायन" बनते हैं। एक जैसा होने पर भी उनका प्रभाव कई बार अलग होता है। बड़ फल और आंवला दोनों रस गुण, वीर्य और विपाक में समान धर्म वाले हैं। परन्तु आंवले में एक अतिरिक्त गुण यह है कि वह वात पित्त कफ इन तीनों दोष को हरता है। ऑक्सीजन और हाईड्रोजन दोनों उड़नील हैं परन्तु दोनों मिलकर अलग ही "जल" बनता है। सोडियम—अत्यन्त तीक्ष्ण एवं उग्र गंध वाला है परन्तु क्लोरीन से मिल कर खाने योग्य नमक बनता है। दन्ती और चित्रक समान रस वाले हैं। मिलकर ये अधिक प्रभावी बनते हैं। मधु और मुनक्का मिलाकर अग्नि दीपन कराते हैं। आंवला तथा लकुच समान रस वाले हैं — मिलकर वात पित्त कफ का शमन करते हैं।

वैद्य रति राम टाक सचित्र आयुर्वेद

सीसा-विषाक्तता....

से आज तक काफी बढ़ा है। सीसायुक्त पेट्रोल जिससे पर्यावरणीय सीसे की मात्रा में बढ़ोत्तरी की है, का प्रयोग पिछले सदी से बढ़ा है। सीसा शरीर के सभी तंत्रों को प्रभावित करता है। बच्चों तथा भ्रूण के विभिन्न तंत्रों के विकास में इसकी अहम भूमिका है। तीव्र विषाक्तता के लक्षणों में तनाव, गुर्दे की खराबी और संज्ञानात्मक असुतलन भी इसके दीर्घ कालिक प्रभावों में आते हैं। रूधिर में इसकी 10 µg/dl मात्रा कोमा की स्थिति तथा इसकी 100 µg/dl मात्रा मृत्यु की स्थिति को पैदा करती है। सीसा, कोशिका

स्तर तथा उपकोशिका स्तर पर होने वाली कैल्सियम मध्यस्थ क्रियाओं के लिए एक प्रतिद्वन्द्वी का कार्य करता है। हीम—उपापचय के कुछ चरणों में भी सीसे की अवरोधक क्रिया के प्रमाण हैं। सीसा हीम के जैव—संश्लेषण में अवरोध उत्पन्न करके लाल कणिकाओं तथा Saninol-erulenic acid dehydroge-nase की अभिक्रिया में कमी करता है। शिलू के अनुसार, विकासशील देशों में सीसा युक्त पेट्रोल के उपभोग के कारण आज भी सीसा विषाक्तता एक गहरे संकट के रूप में व्याप्त है। आटोमोबाइल कार्यशाला में कार्य

करने वाले मजदूर जिनकी दिनचर्या में वाहन के विभिन्न भागों का संगठन, स्प्रे पेंटिंग, वेल्डिंग तथा रेडियटर रिपेयरिंग के कार्य शामिल होते हैं, वे दीर्घकालिक सीसा विषाक्तता के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। तीव्र सीसा विषाक्त का सर्वश्रेष्ठ मापन ब्लड ज़िंक प्रोटोफाईरीन (BZPP) द्वारा किया जाता है क्योंकि इसकी—आयु अधिक है। पशुओं पर किए गए प्रायोगिक परीक्षणों में सीरम प्रोटीन तथा कोलेस्ट्रॉल के स्तर में एक महत्वपूर्ण कमी देखी गई जो कि सीसा विषाक्तता की वजह से थी।

प्रो० यामिनी भूषण त्रिपाठी

वर्गीकृत विज्ञापन

Letter of Interest for
Proposed Project to DST

Popularizing Science in
School going Children

Please contact :

Prof. Yamini Bhusan Tripathi

Department of Medicinal Chemistry

IMS, Banaras Hindu University, Varanasi-221005

Campus Mail Service

(One can pay from Project or Personal account)

Join Today

Rs. 150/= per month

2 Pickups/ day

Organized by

BHU Telephone Director Committee

Contact : 230-7547

yaminiook@yahoo.com

पुस्तक दान

प्रो० एस० एन० त्रिपाठी मेमोरियल फाउण्डेशन ने गरीब बच्चों को विभिन्न विषयों एवं पाठ्यक्रमों के लिए निःशुल्क पुस्तक उपलब्ध कराने का निर्णय किया है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप अपने बच्चों की पिछले कक्षाओं की पुस्तकों को दान के रूप में देने की कृपा करें। मेले का आयोजन करके स्कूली छात्रों को दिया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र : एस० एन० त्रिपाठी मेमोरियल फाउण्डेशन,
71 कृष्णबाग, नगवा, वाराणसी-221005

आवश्यकता

घर में खाना बनाने वाली कुक की

कार्य समय : सुबह 7-10 बजे तथा 2-5 बजे तक

पार्ट टाईम अखबार वितरित करने हेतु एक स्वस्थ व्यक्ति की जो साइकिल चलाना जानता हो।

सम्पर्क सूत्र : 71 कृष्णबाग, नगवा, वाराणसी-221005

आमन्त्रण

आर्युविज्ञान बुलेटिन में आप अपना स्वास्थ्य सम्बन्धी अनुभव एवं लेख भेजने की कृपा करें।

गेस्ट एडिटर के रूप में इस पत्रिका के किसी एक अंक को प्रकाशित करने के लिए आप आमंत्रित हैं।

हमारी विज्ञापन दरें

- नगर आसपास के जिलों में मुफ्त प्रसार।
- व्यक्तिगत पामप्लेट प्रकाशन से भी सस्ता।
- 5 हजार प्रतियां मुफ्त वितरित होती हैं।

विज्ञापन के दर निम्न प्रकार हैं—

45/- प्रति कालम सेंटीमीटर (प्रथम पृष्ठ), 35/- प्रति कालम सेंटीमीटर, 4500/- पूरा पेज, 2500/- आधा पेज

वर्गीकृत विज्ञापन 16 शब्दों तक 60/- अतिरिक्त शब्द रू० 5/-

इस अखबार के द्वारा विज्ञापन
हैण्ड बिल से भी सस्ता

Require Volunteers to Run Senior Citizen
Day Care Center

सम्पर्क सूत्र : एस० एन० त्रिपाठी मेमोरियल फाउण्डेशन
71 कृष्णबाग, नगवा, वाराणसी-221005

भारतीय संस्कृति पर मंडराते काले बादल

आज सम्पूर्ण विश्व में हिन्दू, सभी अन्य प्रमुख धर्मों—इसाई व मुस्लिमों से कम हैं। विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, न्यायिक परिषदों के प्रयास भी कुछ ऐसे हो रहे हैं, जिनके कारण सनातनी हिन्दू की संख्या कम होती जा रही है। सुख—दुःख—शान्ति, क्या खेया—क्या पाया की सही गणना करने लायक जबतक मनुष्य होता है, तबतक बहुत देर हो चुकी होती है। मनुष्य वृद्ध हो चुका होता है। जवानी की ताकत उसने (मनुष्य ने) कहीं और झोक दी होती है, जो समाज को कहीं और दिशा दे चुकी होती है। चाहे नेहरू या इन्दिरा हो, मुलायम या लालू हों वी. पी. या अर्जुन हों, सभी के साथ देखा जा सकता है और यह अनुभव स्वयं में करते होंगे। हिन्दू सहिष्णु वादी है त्यादी है ग्रंथ और पुराण सदैव सतगुणी होने की बात करता है।

स्वतंत्रता को याद करें तो इतिहास के पन्ने बताते हैं कि धर्म के आधार पर देश का बटवारा सन् 1947 भारत और पाकिस्तान को जन्म दिया। उस वक्त देश में बचे मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग अल्पसंख्यक कहे गए। संवैधानिक परिभाषा के मुताबिक अल्पसंख्यक वह वर्ग होता है जिसके मताधिकार से देश की राजनीति में अथवा चुनाव के परिणाम प्रभावित नहीं होता। क्या आज मुस्लिमों को अल्पसंख्यक कहना न्यायिक या संवैधानिक है। आज भारत में मुस्लिमों का मतदान ही चुनाव परिणाम का प्रमुख कारण है। आज उत्तर प्रदेश के सहरी मन्त्री द्वारा हरित प्रदेश के जगह मुस्लिम प्रदेश धर्म के आधार पर बनाने की बात कही जाती है। क्या भारत के संविधान में भारतीय मन्त्री द्वारा मुस्लिम प्रदेश की मांग न्यायिक या संवैधानिक है? लोकतंत्र की आजादी ने व

मुस्लिमों के बहुमत ने आज वन्देमातरम् के विरोध का फतवा भी जारी कर दिया है। क्या स्वतंत्रता के बाद से आजतक मुस्लिमों के धार्मिक उल्लेमाओं या गुरुओं को इस गीत का अर्थ पहले मालूम नहीं था। या आज उन की बहुमत इसका विरोध कर रहा है। राष्ट्र से बड़ा इस्लाम धर्म हिन्दू राष्ट्र



पं० मदन मोहन मालवीय जी ने सनातन संस्कृति की रक्षा हेतु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की तथा एक पत्रिका का सम्पादन शुरू किसकी एक प्रति अभी भी निकाली थी जो आज भी भारत कला भवन में मौजूद है।

विरोधी सोच व कर्म है और संवैधानिक और न्यायिक व्यवस्थाएं निश्चित इसका विरोध करती है। धन—वैभव शिक्षा ही क्या किसी व्यक्ति या देश का उद्देश्य होना चाहिए या शान्ति। सनातनी व्यवस्था सुख और शान्ति को महत्व देता है ना कि धन व शिक्षा को।

आज योजनाकार मूल सोच से भटक गए हैं। बिना सुख और शान्ति के कोई व्यक्ति परिवार समाज—प्रदेश या देश विकास नहीं कर सकता। धन, शिक्षा का सदुपयोग सुख और शान्ति के लिए ही करना चाहिए केवल सुख के लिए। भोगी व्यक्ति कभी भी स्वस्थ और शान्त नहीं रहते। सुखी वही व्यक्ति होता है जो मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से स्वस्थ रहता है यथा—“सुख संज्ञक आरोग्यम् विकारो दुःखमेव च” शान्ति सदैव आहार—विहार नियम से प्राप्त

होगा। और शान्त व्यक्ति ही सुख का भोग करता है। आज विश्व में विकसित देशों में अशान्ति बढ़ती जा रही है। जनता दुखी है तमाम भोग विलासता के बाद भी। बिना धर्म के मनुष्य का जीवन पशुवत है। धर्मेण हीना पशुभिः समानाः। और भारत वर्ष धर्म प्राण देश है। धर्मो रक्षति रक्षितः

आवश्यकता है बाह्य आडम्ब्रों, आवश्यकताओं को त्यागने की। आज समाज पाखण्डी हो गया है जो वो नहीं बनना अथवा दिखना चाहता और जो नहीं है वो दिखना और बनना चाहता है। घर—घर टेलिविज़न के रास्ते जो परोसा जा रहा है समाज उसे देख रहा है सीख रहा है। परन्तु क्या पश्चात्य दर्शन शान्ति दे पाएगा। समाज की व्यवस्था को तोड़ने का कुचक्र को यदि हम सार्थक प्रयास करेंगे तो अशान्ति मिलेगा। चाहे वह अन्तर्जातीय विवाह हो अथवा सनातनी आचार विचार से विमुखता हो। हमारे भारत वर्ष देश को कोई भी निर्णय लेने के पहले अवश्य सोचना चाहिए कि इसका मेरुदण्ड सनातनी वैदिक सोच है। जो व्यवस्था सुख—शान्ति—वैभव प्रदान करे वह अप्राप्य नहीं हो सकती। रूढ़िवाद को सही मायने में समझने की जरूरत है। और भारतीयों को विरासत में ज्ञान प्राप्त है। जिसे हमें कभी भी त्यागना नहीं चाहिए और न ही ऐसे प्रयास या कानून बनने चाहिए जिससे आघातित हो हमारा सनातनी समाज व सत् मानसिकता। हम भारतीयों को सच्चे मायने में सनातनी व्यवस्था में लौटना ही चाहिए और हमारा प्रयास धीरे—धीरे ही इस दिशा में हो बेहतर है। इसके लिए बाह्य और आन्तरिक दो परिवर्तन वांछित है जो सरल हो उसे स्वीकार कर व्यवहार में लाना आज आवश्यक है। हमारा पहिनावा, केश, तिलक, शिखा, जनेऊ वस्त्र, भारतीय वेश—भूषा, प्रथम दृष्टि में अनुकरणीय होगा। यह आडम्बर कहके भूला देना चाहिए। गायत्री जप, प्राणायाम, योग दर्शन—पूजन को कर्म में अपनाए देखिए स्वयं शक्ति में कितना वृद्धि होगा। सनातनी व्यवस्था में सरलता से जटिलता सभी सूत्र है। उपर जाना

सदैव कठिन होता है पतन सरल होता है। पश्चात्य सोच, पहिनावा, खान—पान सरल है पर स्वस्थ नहीं है। तुष्टीकरण की राजनीति से अब हमें बाज आना चाहिए। भारत में अल्पसंख्यक अब बहुसंख्यक हो गये इस्लाम को कोई भी राजनैतिक संस्था बोल नहीं रही। और आज भी लगातार विभिन्न राजनेताओं द्वारा विशेष सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं क्या आज पचास वर्षों में भारत में इस्लाम के बढ़ती संख्या ने भारतीय दर्शन व लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रभावित नहीं किया है? मुस्लिम प्रदेश का मांग, वन्देमातरम् पर प्रतिबन्ध, भारत माता की जय पर प्रतिबन्ध, हुकूमत में शामिल होने से हुकूमत करने की सोच, अलग मुस्लिम राजनीतिक पार्टी का निर्माण, प्रतिदिन ध्वनि विस्तारक से इस्लामिक धर्म का प्रचार, इस्लाम व अला शब्दों को समाज में प्रचलन, आयेदिन हिन्दू मन्दिरों व समाज पर अनायास आक्रमण, इस्लाम के ताकतो व मंशा को दर्शाते हैं। क्या आने वाले भविष्य के कोख में भारत वर्ष धर्मप्राण देश—सुरक्षित हैं। सत्यंवाद, धर्मचर—आचार धर्म, स्वधर्म निधं को किसी शीशे की आवश्यकता नहीं है वह स्वयं प्रकाशवान है। जरूरत है सही मायने में सनातनी संस्कृति को समझने और व्यवहार में लाने की। वैसे तो हर युग में देवी—देवताओं पर आसुरी आक्रमण हुए परन्तु सनातनी सोच की सदैव विजयी हुई और सदैव होती रहेगी। पर हर युगों में एक प्रयास हुआ जिससे आसुरों का नाश हुआ सुख और शान्ति की पुनः स्थापना हुई आज भी एक सार्थक प्रयास की आवश्यकता है जिसे आसुरी पैशाची शक्तियों का नाश हो सके और सच्चे सुख और शान्ति का समय आ सके। डॉ० वाचस्पति त्रिपाठी अध्यक्ष, सनातन संस्कृति केन्द्र 71 कृष्णबाग, नगवा, वाराणसी

Medical News Letter

आयुर्विज्ञान बुलेटिन

प्रकाशक, मुद्रक मालिक

डा० प्रतिभा त्रिपाठी

मुद्रण स्थल—काबरा प्रेस

सम्पादक : डा० यामिनी भूषण त्रिपाठी

कार्यालय : 1, गांधी नगर, नरिया, वाराणसी,

ई—मेल : ayurvignyanbull@yahoo.com

BOOK POST

